अध्ययन सामग्री
बी॰ ए॰ (संस्कृत) पार्ट 3
प्रश्नपत्र - पञ्चम
डॉ॰ मालविका तिवारी
सहायक प्रोफेसर
संस्कृत विभाग
एच॰ डी॰ जैन कॉलेज
वी॰ कुं॰ सिं॰ वि॰
आरा

10.07.20

आरण्यक का परिचय

आरण्यक ग्रंथ ब्राह्मणों के परिशिष्ठ के रूप में पठित हैं। ब्राह्मण ग्रन्थों में ही प्राय: ये बाद में जुड़े हुए पाए जाते हैं। इनका पाठ अरण्य (जंगलों) में होने के कारण इन्हें आरण्यक कहा जाता है।

अरण्याध्ययनादेतद् आरण्यकमितीर्यते।
अरण्ये तदधीयेत्येवं वाक्यं प्रवक्ष्यते॥

अरण्य में अधीत होने के कारण इन्हें आरण्यक कहा जाता है। अर्थात् इन ग्रन्थों के मनन का स्थान अरण्य का एकान्त शान्त वातावरण ही उपयुक्त था। वनवासी वानप्रस्थियों के यज्ञ-यागादि विधानों को सम्पन्न करनेवाले ग्रन्थ ही आरण्यकों के नाम से प्रसिद्ध हुए। सदाशिव आप्टे ने 'आरण्यक' शब्द की व्याकरण सम्मत व्याख्या करके स्पष्ट किया है कि 'आरण्यक' ग्रन्थ एक प्रकार से धार्मिक एवं दार्शनिक लेख हैं जो कि ब्राह्मणों से संबंधित हैं, जिनका निर्माण या तो अरण्यों (वनों) में हुआ या तो वनों में पढ़ाए जाने के लिए वे निर्मित हुए। अरण्य शब्द में 'भव' अर्थ में 'वुञ्' प्रत्यय जोड़ देने से 'आरण्यक'

शब्द व्युत्पन्न होता है।

आरण्यक अर्थात् अरण्यों में उद्भुत सांसारिक विषय-वासनाओं एवं नानाविध बाधा-बन्धनों को त्याग कर और शांत, एकान्त, जनकोलाहल से दूर वनों में रहकर ऋषिश्रेष्ठों ने जिस ब्रह्मविद्याविषयक महान् ज्ञान का साक्षात्कार किया था, उसी का संग्रह आरण्यक ग्रन्थों में परिपूरित है।

जिस प्रकार गृहस्थाश्रम के यज्ञ-विधानों और दूसरे कतिपय कर्मों का प्रतिपादन ब्राह्मण-ग्रन्थों में वर्णित है, उसी प्रकार वानप्रस्थाश्रम के जितने भी यज्ञ, महाव्रत तथा होत्र आदि कर्म हैं, उनकी विधियाँ और व्याख्याएँ आरण्यक ग्रन्थों में प्रतिपादित हैं। आरण्यक वानप्रस्थियों के कर्मकाण्ड ग्रन्थ तो हैं ही, साथ ही उनमें यज्ञ की आध्यात्मिक व्याख्या का प्रतिपादन भी बड़े अच्छे ढंग से किया गया है। उनमें कर्म-मार्ग और ज्ञान-मार्ग, दोनों का समन्वय है। उपनिषद्-ग्रन्थों में जिस विस्तृत ब्रह्मज्ञान का प्रतिपादन है, उसका मूलाधार ये आरण्यक-ग्रन्थ ही हैं। आरण्यकों को ब्राह्मणगत कर्मकाण्ड और सूक्ष्म औपनिषदिक आध्यात्मिक चिन्तन की कड़ी के रूप में देखा जा सकता है। एक तरह से यह भी कहा जा सकता है कि वैदिक कर्मकाण्ड के झंझटों से ऊबकर वैदिक चिन्तकों का एक समूह आध्यात्मिक चिन्तन में संलग्न हुआ। फलतः इन आरण्यकों का प्रतिफलन हुआ।

महाभारत के आदिपर्व में उल्लिखित है कि-
"आरण्यकं च वेदेभ्य ओषधिभ्योऽमृतं यथा" अर्थात् औषधियों से उद्धृत अमृत के समान ही आरण्यक वेदों से सारभूत मानकर उद्धृत किया गया है। आरण्यक का दूसरा नाम 'रहस्य' भी है क्योंकि यह यज्ञ के गूढ़ रहस्य का प्रतिपादन करता है और कर्मकाण्ड की दार्शनिक व्याख्या

करता है।

प्राण-विद्या का प्रतिपादन आरण्यकों की प्रमुख विषय-वस्तु है। ऐतरेय आरण्यक में सभी इन्द्रियों में प्राणों की श्रेष्ठता प्रतिपादित की गयी है —

"सोऽयमाकाशः प्राणेन बृहत्या विष्टब्धः, तद्यथायमाकाशः प्राणेन बृहत्याविष्टब्ध एवं सर्वाणि भूतानि आपिपीलिकाभ्यः प्राणेन बृहत्या विष्टब्धानीत्येवं विद्यात्"।

"प्राण इस विश्व का धारक है। प्राण की ही शक्ति से जैसे यह आकाश अपने स्थान पर स्थित है, उसी तरह सबसे बड़े प्राणी से लेकर चींटी तक समस्त जीव इस प्राण के द्वारा ही विधृत हैं।"

समस्त विश्व के आश्चर्यों की गोचरता प्राणों के ही माध्यम से है। प्राण समस्त विश्व का धारक है। वह सर्वत्र व्याप्त है। यह समस्त इन्द्रियों का एकमात्र आधार होने के कारण समस्त अनुभूत और गोचर विश्व का आधार है अतः इसे गोपा (रक्षक) भी कहा गया है। मनुष्य का जीवन तभी तक चलता है जब तक उसके शरीर में प्राण है

"यावद्ध्यस्मिन् शरीरे प्राणो वसति तावदायुः"

प्राण ही अन्तरिक्ष और वायु का सर्जक है। प्राण जगत् का स्रष्टा तथा पिता (पालक) है। इस बात का उल्लेख ऐतरेय आरण्यक में इस प्रकार किया गया है।—

"प्राणेन सृष्टावन्तरिक्षं वायुश्च। अन्तरिक्षं वा अनुचरन्ति अन्तरिक्षं अनुश्रृण्वन्ति। वायुरस्मै पुण्यं गन्धमावहति। एवमेतौ प्राणपितरं परिचरतोऽन्तरिक्षं च वायुश्च।"

इस प्रकार आरण्यकों में प्राण की विशद महत्ता का प्रतिपादन किया गया है। प्राण की इसी सर्वव्यापकता तथा आध्यात्मिकता का विकास आगे चलकर औपनिषदिक ब्रह्मचिन्तन धारा

में हुआ।

मंत्र-संहिताओं और ब्राह्मणों की ही भाँति आरण्यक ग्रन्थों की भी संख्या 1130 थी, किन्तु जिस प्रकार संहिताएँ और ब्राह्मण कुछ ही उपलब्ध हैं, उसी प्रकार आरण्यक भी केवल आठ ही प्राप्य हैं। जिनके नाम हैं – ऐतरेय आरण्यक, शांखायन आरण्यक, तैत्तिरीय आरण्यक, वृहदारण्यक, माध्यन्दिन-वृहदारण्यक, काण्व-वृहदारण्यक, जैमिनीयोपनिषदारण्यक और छान्दोग्यारण्यक।

ऐतरेय आरण्यक – यह ऐतरेय ब्राह्मण का ही परिशिष्ट भाग है। इसमें पाँच आरण्यक हैं, जो वस्तुतः पृथक् ग्रन्थ माने जाते हैं। ऋग्वेद के मन्त्रों का बहुशः उद्धरण 'तदुक्तमृषिणा' निर्देश के साथ यहाँ किया गया है। प्रथम आरण्यक में 'महाव्रत' का वर्णन है जो ऐतरेय ब्राह्मण के गवामयन का ही एक अंश है। द्वितीय में निष्कैवल्य शस्त्र या उक्थ तथा प्राण विद्या व पुरुष का विवेचन है। इसी द्वितीय आरण्यक के चतुर्थ, पञ्चम, तथा षष्ठ अध्यायों में ऐतरेय उपनिषद् निहित है। तृतीय आरण्यक संहितोपनिषद् भी कहा जाता है। इसमें संहिता, पद, क्रम पाठ तथा स्वर व्यञ्जन आदि का विस्तृत विवेचन है। यह अंश निःसन्देह प्रातिशाख्य तथा निरुक्त से प्राचीनतर है तथा व्याकरण विषयक नितान्त प्राचीन विवेचन है। यास्क से प्राचीन होने से यह आरण्यक निःसन्देह एक सहस्र वर्ष निरुक्त पूर्व का होगा। चतुर्थ आरण्यक छोटा है। इसमें महाव्रत के पञ्चम दिन प्रयुक्त होने वाली कुछ ऋचायें दी गई हैं। अन्तिम आरण्यक में निष्कैवल्य शस्त्र का वर्णन है। इन आरण्यकों में प्रथम तीन के रचयिता

उपनिषद् ग्रन्थ भी माना जाता है।

शुक्ल यजुर्वेद के शतपथ ब्राह्मण की माध्यन्दिन और काण्व दोनों शाखाओं के अन्तिम छः अध्यायों को बृहदारण्यक कहते हैं। इसमें बीच-बीच में यज्ञों का रहस्य वर्णन किया गया है, अतः इसे आरण्यक कहते हैं। किन्तु इसमें आत्मतत्त्व का विस्तृत उपदेश दिया गया है इस प्रकार उपनिषद् का अधिक वर्णन होने के कारण इसे 'उपनिषद्' भी कहते हैं। इस प्रकार इसका नाम 'बृहदारण्यकोपनिषद्' भी है।

माध्यन्दिन और काण्व दोनों ही शाखाओं के बृहदारण्यकों में याज्ञवल्क्य और जनक का सम्वाद तथा मैत्रेयी एवं गार्गी दोनों ब्रह्मवादिनी नारियों का आख्यान वर्णित है। इसमें अश्वमेध यज्ञ का रहस्य समझाया गया है।

तलवकार आरण्यक — सामवेद की जैमिनीय शाखा से सम्बद्ध आरण्यक 'तलवकार आरण्यक' है। इसी को 'जैमिनीयोपनिषद् ब्राह्मण' भी कहते हैं। इसमें चार अध्याय हैं। प्रत्येक अध्याय अनुवाकों में विभाजित है। इसमें साम-मन्त्रों की सुन्दर व्याख्या की गयी है। इस आरण्यक के चतुर्थ अध्याय को 'केनोपनिषद्' भी कहते हैं। इसका दूसरा नाम 'तलवकार उपनिषद्' भी है।

छान्दोग्यारण्यक — यह सामवेद के ताण्ड्यब्राह्मण से सम्बद्ध आरण्यक है। छान्दोग्योपनिषद् का प्रथम भाग छान्दोग्यारण्यक है। इसमें 'सामन्' और 'उद्गीथ' की धार्मिक दृष्टि से व्याख्या की गई है।

अथर्ववेद का कोई आरण्यक नहीं मिलता।